सतत विकास पर रेडियो धारावाहिक # 22

एपिसोड शीर्षक : आओ, बारिश में पानी बोएं

अवधिः 27 मिनट **स्क्रिप्टः** श्रीनिवास ओली

समन्वयकः श्री बी.के. त्यागी

पात्र परिचय

1.	रोहित-	बारहवीं का छात्र
2.	सौम्या-	आठवीं कक्षा की छात्रा
3.	दिवाकर -	रोहित व सौम्या के नानाजी (बुजुर्ग)
4.	गोविंद -	रोहित व सौम्या के मामा (युवा)
5.	डा. अनवर -	एनजीओ संचालक (युवा)

SIGNATURE TUNE ..... FADEOUT

उद्घोषक : (*Welcome+Recap+Intro*) रेडियो विज्ञान धारावाहिक ... में आपका स्वागत है। आज के एपिसोड में हम बात करेंगे बारिश के पानी को जमा करके उसके उपयोग के बारे में। तो आइए चलते हैं रोहित व सौम्या के पास, जो गर्मियों की छुट्टी बिताने के लिए पहाड़ों में अपने नाना के घर गए हैं....और जानते हैं कि वहां कैसे हो रही बारिश से पानी की पैदावार।

---------- SIGNATURE TUNE----------

SCENE ONE

(एक पहाड़ी गांव / चिड़ियों के चहचहाने की आवाज / पार्श्व में बांसुरी का धीमा संगीत)

सौम्याः नानाजी, यहां पहाड़ों में तो काफी पुराने वक्त के मकान नजर आ रहे हैं। आपका मकान भी काफी पुराना ही लग रहा है।

दिवाकरः हां बेटा, ये तो बहुत पुराना है। पिताजी ने इसे बनाया था। उस समय तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था।

रोहितः मतलब, उम्र में ये आपसे भी बड़ा है।

दिवाकरः हां, पिताजी बताते थे कि ये मकान मुझसे 10 साल बड़ा है। और तुम्हारी मम्मी की उम्र तो इसकी आधी भी नहीं हुई है। **(हंसी)** हा.. हा.. हा..

रोहितः मामा जी, तब तो आप भी इस मकान के सामने छोटे बच्चे ही हो....

(सभी के हंसने का आवाज़)

गोविंद : हां, ये तो है। लेकिन पिताजी इसका रखरखाव कुछ इस तरह से करते हैं कि ये इतना पुराना लगता नहीं।

सौम्याः सही कहा मामाजी आपने.....। अच्छा, नानाजी एक बात बताइए। यहां पहाड़ के पुराने मकानों की छतें ढलान वाली क्यों होती हैं।

रोहितः हां सौम्या। सही कह रही हो, मैंने तो कभी इस बात पर गौर ही नहीं किया।

दिवाकरः बच्चो, आजकल की तुलना में पहले पहाड़ों में बर्फ काफी अधिक गिरती थी। ढलान वाली छत होने से ज्यादा बर्फ छत में जमा नहीं हो पाती है। और जो थोड़ी-बहुत बर्फ जमा भी होती है, वो जल्द ही पिघल भी जाती है।

सौम्याः क्यों.....। बर्फ के छत में जम जाने से कोई नुकसान हो सकता है क्या।

दिवाकरः हां, बिल्कुल। सीधी छत होगी तो सारी बर्फ उसमें ही जमा हो जाएगी। अधिक भार होने से छत टूटने का भी खतरा हो सकता है और पानी के अंदर रिसने का भी।

रोहितः ओह, तभी उस समय के इंजीनियरों ने यह तकनीकी खोजी होगी।

दिवाकरः हां, उस समय के इंजीनियरों को तुम कम नहीं आंक सकते। वे भी सब हिसाब-किताब से काम करते थे।

सौम्याः ये छत के किनारे-किनारे एक पाइप जैसा क्या जा रहा है नानाजी।

दिवाकरः ये भी उस समय के इंजीनियरों का एक कमाल है।

सौम्याः कमाल, कैसा कमाल।

दिवाकरः बारिश के पानी के इस्तेमाल का बेहतरीन नमूना है ये।

रोहितः वो कैसे नानाजी।

दिवाकरः ये जो तुम पाइप देख रहे हो, इसे हमारी भाषा में पतनाला कहते हैं। बारिश का जो भी पानी छत में गिरता है, वो इन पाइपों से होता हुआ एक साथ हमें मिल जाता है। उस पानी को हम इकट्ठा कर लेते हैं और बाद में अपनी जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करते हैं।

रोहितः तो आप इसे इकट्ठा कैसे करते हैं।

दिवाकरः ये तो बहुत ही आसान है। हमने नीचे एक टैंक बना लिया है। वो देखो... छत से जो पाइप नीचे आ रहा है, उसे हमने इस टैंक से जोड़ दिया है। अब छत का पूरा पानी टैंक में जमा हो जाता है।

सौम्याः तो फिर ये पानी आपके क्या काम आता है।

दिवाकरः ये तो बहुत ही काम का है। इससे चाहे कपड़े धो लो, गाय-भैंस को पिला लो या घर के पास के पौधों की सिंचाई कर लो।

सौम्याः अरे वाह, ये तो बहुत ही गजब है।

रोहितः और नानाजी, अगर ये पानी इकट्ठा नहीं होता तो ये तो बेकार ही बह जाता। किसी काम ही नहीं आता।

दिवाकरः सही कहा रोहित तुमने। जो लोग पानी का महत्व जानते हैं, वो पानी की एक-एक बूंद सुरक्षित रखते हैं। और जो नासमझ हैं, वो उसकी कद्र ही नहीं करते।

सौम्याः टैंक के आगे एक गड्ढा और दिखाई दे रहा है। ये भी इससे ही जुड़ा है क्या।

दिवाकरः हां। जब बारिश के पानी से हमारा टैंक भर जाता है तो पानी ओवरफ्लो हो जाता है। ओवरफ्लो होकर पानी इस कच्चे गड्ढे में भरता है। जिससे पानी धीरे-धीरे रिसता हुआ जमीन के अंदर चला जाता है। इस पानी से भूजल स्तर में सुधार होता है।

रोहितः तो क्या नानाजी, ये पतनाला, पाइप टैंक सब पुराने समय का ही है।

दिवाकरः जब से मुझे याद है, ये पतनाला तो मैंने शुरू से ही मकान में देखा है। बस उस समय पतनाले से गिरने वाले पानी से हम लोग एक-दो बाल्टी भर लेते थे, बाकि का पानी बह जाता था। ये पाइप, टैंक वगैरह तो हमने बाद में बनाए हैं।

सौम्याः तो पानी बचाने का आपका आइडिया तो जबरदस्त है नानाजी।

दिवाकरः नहीं, नहीं बच्चो.....। ये मेरा आइडिया नहीं है। इसका श्रेय तो डा. अनवर को जाता है।

सौम्याः डा. अनवर..... ये कौन हैं मामाजी।

गोविंद : डा. अनवर पिछले कई सालों से वर्षा जल संरक्षण पर काम कर रहे हैं। कुछ समय से मैं भी

उनकी ही संस्था से जुड़ा हूं। उन्होंने यहां लोगों को बताया कि बारिश के पानी को जमा करके हम खुद के लिए कितने बेहतर हालात पैदा कर सकते हैं।

रोहितः मामा जी, अनवर अंकल से हमारी मुलाकात हो पाएगी क्या। वर्षा जल संरक्षण को लेकर हमारे मन में कई सवाल हैं, वो हम उनसे पूछना चाहते हैं।

गोविंद : यह तो बहुत अच्छी बात है। डा. अनवर आजकल काम के सिलसिले में गांव में भी आए हैं। उनसे मुलाकात भी हो जाएगी।

सौम्याः तो चलें मामा जी।

गोविंद : नहीं, अभी नहीं। दोपहर में तो कुछ लोगों के साथ उनकी मीटिंग होनी है। शाम को हम लोग उनसे मिल सकते हैं।

सौम्याः तो तब तक हम क्या करें ?

गोविंद : मैं सोच रहा हूं कि डा. अनवर से मिलने से पहले हम लोग जंगल घूम कर आते हैं। क्या पता तुम लोगों के कुछ सवालों का जवाब वहां भी मिल जाए।

सौम्याः जंगल में.. जंगल में भला कैसे मिलेगा जवाब ?

गोविंद : अरे चलो तो सही, जवाब न भी मिला तो थोड़ी मौज-मस्ती ही हो जाएगी।

रोहितः हां, हां. बिल्कुल। चलो चलो।

दिवाकरः ठीक है बच्चो.....। आराम से जाना जंगल में। गोविंद, बच्चों का ध्यान रखना।

गोविंद : पापा, अब ये बच्चे बड़े हो गए हैं, ये मेरा ध्यान रखेंगे।

(सभी के हंसने का स्वर.....धीरे-धीरे दूर होती आवाज))

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

SCENE TWO

(जंगल में सूखे पत्तों के ऊपर से चलने की आवाज आ रही है, साथ ही झिंगुर का स्वर भी)

सौम्याः ओह.....। कितना खूबसूरत जंगल है मामाजी.....। इन कीड़ों की आवाज सुनकर तो ऐसा लग रहा है, जैसे कोई संगीत बज रहा हो।

गोविंद : हां सौम्या। बिल्कुल। और यह संगीत सुनाने वाले कीड़े का नाम है झिंगुर। कई झिंगुर जब एक साथ आवाज निकालते हैं तो ऐसा ही संगीत सुनाई देता है।

रोहितः ये जंगल तो कितना घना है। इतने सारे पेड़..... और वो भी अलग-अलग तरह के।

(बात को बीच में काटते हुए)

सौम्याः लेकिन मामा जी आप तो कह रहे थे कि यहां हमारे कुछ सवालों का जवाब भी मिलेगा। यहां तो बस पेड़ ही पेड़ हैं, जवाब कहां है।

गोविंद : ये पेड़ ही तुम्हारे जवाब हैं।

रोहितः पेड़ों का बारिश के पानी के संरक्षण से क्या मतलब है। ये तो हमारी कुछ समझ में नहीं आया।

गोविंद : बारिश का पानी रोकने में पेड़ों की बहुत अहम भूमिका है। बरसात में तेजी से बह रहे पानी को पेड़ रोकते हैं और यह पानी धीरे-धीरे जमीन के अंदर जाता है। पेड़ों की जड़ें भी पानी को नीचे पहुंचाकर जलस्तर को बनाए रखने में काफी मदद करती हैं।

रोहितः तो इसका मतलब.....। जहां पेड़ होंगे, वहां बारिश का पानी बर्बाद नहीं होगा।

गोविंद : बिल्कुल सही कहा रोहित तुमने।

सौम्याः तब तो हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए, उनसे हमें ताजी हवा भी मिलेगी और पानी भी।

रोहितः ओह, हमारी सौम्या तो बड़ी समझदार हो गई है। **(हंसते हुए)**

सौम्याः और क्या.....। तो मामा जी, घर की तरफ लौटें या जंगल में अभी और जवाब मिलेंगे।

गोविंद : अब पहाड़ में थोड़ा ऊपर की तरफ बढ़ते हैं। वहां कुछ और तुम्हारा इंतजार कर रहा है। लेकिन उसके लिए पहाड़ में चढ़ना होगा। तैयार हो क्या।

सौम्याः हां हां मामा जी । बिल्कुल तैयार हैं। हमें जंगल में चलने में मजा आ रहा है।

गोविंद : तो चलो फिर..... बढ़े चलो।

(पत्तों पर लोगों के चलने की आवाज / 3 SECOND MUSIC)

रोहितः अरे.....। पहाड़ में इतनी ऊंचाई पर ये तालाब जैसे क्या हैं।

सौम्याः हां। कुछ तो सूख गए हैं और कुछ में तो थोड़ा-बहुत पानी भी है।

गोविंद : बच्चो, मैं इन्हें दिखाने ही तुम्हें यहां लाया हूं।ये तालाब भी तुम्हारे सवालों के जवाब हैं।

सौम्याः **(चौंकते हुए)** ये कैसे मामा।

गोविंद : बारिश के पानी को सहेजने का बेहतरीन उदाहरण हैं चाल-खाल.....

सौम्याः चाल-खाल ? **(आश्चर्य जताते हुए)**

गोविंद : हां, चाल-खाल। हमारे पूर्वज भी बारिश के पानी का संचयन करना जानते थे। उन्होंने ऊंचाई वाले इलाकों में ऐसे कई तालाबों का निर्माण किया। उत्तराखंड में ऐसे तालाबों को स्थानीय भाषा में चाल-खाल कहा जाता है।

सौम्याः ये चाल-खाल कैसे काम करते हैं मामा।

गोविंद : दरअसल ये कोई सदाबहार तालाब नहीं होते हैं, बल्कि पहाड़ों में बस्ती से दूर ऊंचाई वाली जगह पर एक बड़ा सा गड्ढा बनाकर उसे चारों ओर मिट्टी-पत्थरों से चिनाई कर दी जाती है। इस संरचना को ही चाल कहा जाता है।

सौम्या : चाल तो समझ में आ गया... पर ये खाल क्या हुआ ?

गोविंद : चाल की तुलना में खाल कुछ बड़ा जलाशय है। और ये आमतौर से दो पहाड़ियों के बीच में कुदरती तौर पर बने ढलानों की वजह से बना होता है। आम बोलचाल में इन्हें चाल-खाल कह दिया जाता है। बरसात के मौसम में बारिश का पानी इन चाल और खाल में भर जाता है। एक बार चाल-खाल भर जाने पर इसका कई तरह से उपयोग होता रहता है।

रोहितः वो कैसे ?

गोविंद : घास चरने के लिए पालतू पशु जंगल आते हैं तो चाल का ही पानी पीते हैं। जंगली जानवरों को भी इससे पानी मिल जाता हैं और वो पानी की तलाश में नीचे बस्ती तक नहीं घुसते। बारिश होने के कई महीनों बाद तक यह पानी काम आता है। दूसरा एक बड़ा फायदा ये भी है कि इनकी वजह से भूजल स्तर में सुधार होता है और कई प्राकृतिक जलस्रोत इससे रिचार्ज होते हैं।

सौम्याः वो कैसे मामा जी ।

गोविंद : चाल-खाल में पानी भरने से यह धीरे-धीरे जमीन में रिसते रहता है। क्योंकि चाल-खाल हमेशा ऊंचाई वाले स्थानों पर ही होते हैं। ऐसे में निचले इलाकों के जल स्रोतों को इससे लगातार पानी मिलता रहता है। जब चाल-खाल का पानी सूखने को होता है तो फिर बारिश का समय भी आ जाता है। और यही क्रम चलता रहता है।

सौम्याः तब तो ये चाल-खाल बड़े काम की चीज हैं।

गोविंद : हां, ये तो हैं ही।

रोहितः आपने बताया कि ये चाल-खाल हमारे पूर्वजों के समय से हैं। क्या अब भी चाल-खाल बनाए जा रहे हैं।

गोविंद : ये सच है कि अब इस और लोगों का ध्यान नहीं है। लेकिन कुछ लोग अब भी यह काम कर रहे हैं। यहां उत्तराखंड में गढ़वाल के पौड़ी जिले में सच्चिदानंद भारती ने एक इलाके में

बीस हजार से भी अधिक चाल-खाल तैयार किए। साथ ही वहां पर बांज, बुरांस, उतीस आदि के पेड़ भी लगाए। कुछ समय बाद वहां कई साल पहले सूख चुके जलस्रोतों से पानी निकल आया।

सौम्याः अरे, गजब...।

गोविंद : हां.....। इस काम के लिए भारत सरकार की तरफ से उन्हें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है।

सौम्याः तब तो चाल-खाल जैसे तालाब बनाने की बहुत जरूरत है।

रोहितः मुझे ध्यान आ रहा है कि जब मैं एक बार अपने दोस्त के घर राजस्थान गया था तो वहां भी इसी तरह के बड़े-बड़े तालाब बनाए गए थे। जो बारिश के पानी से ही भरते थे। लोग उसके पानी का उपयोग कपड़े धोने, गाय-भैंसों को पिलाने के लिए करते हैं।

गोविंद : बिल्कुल सही कहा आपने रोहित। मैंने भी वहां के बारे में पढ़ा है। राजस्थान में बारिश के पानी को संरक्षित रखने की बेहद समृद्ध परंपरा रही है। वहां के लोग बारिश के पानी को जमा करने के लिए छोटे हौद बनाते थे जिसे टांका कहा जाता है। इससे बड़े जलाशय को वहां नाडी कहते हैं जिसमें बारिश का पानी इकट्ठा किया जाता था। पिछले कुछ वर्षों से वहां जोहड़ भी बनाये जा रहे हैं।

रोहित : ये जोहड़ क्या होते हैं ?

गोविंद : बारिश के बहते हुए पानी को रोकने के लिए डैमनुमा संरचना बनाकर एक तालाब का रूप दे दिया जाता है। इसे ही जोहड़ कहा जाता है।

सौम्याः इसका मतलब तो है कि छोटे-बड़े तालाब बनाकर भी हम बारिश के पानी का संरक्षण कर सकते हैं।

रोहितः तब तो हम जलसंकट से जूझ रहे अपने देश के कई इलाकों के लोगों की मदद इस तरह कर सकते हैं। क्यों मामा जी ?

गोविंद : देखो बच्चो, देश-दुनिया के बारे में तो मैं और ज्यादा जानता नहीं। ये तो विशेषज्ञ ही बता पाएंगे। और जैसा मैंने आपको बताया, वो विशेषज्ञ हैं, डा. अनवर। तो चलें उनके पास।

रोहितः मामा, वैसे तो आपकी जानकारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन हां, डा. अनवर जरूर इसके बारे में और अधिक जानकारी देंगे।

सौम्याः तो चलो फिर..... देर कैसी।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

(दरवाजे की घंटी बजने की आवाज़ / दरवाजा खुलने की आवाज)

डा. अनवर : आओ बच्चो आओ.....। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। आओ गोविंद, आप भी अंदर आओ।

सौम्या व रोहितः नमस्ते अंकल

गोविंद : नमस्ते सर।

डा. अनवर : नमस्ते, नमस्ते..... बैठो। दिवाकर जी मिले थे रास्ते में, उन्होंने बताया था तुम्हारे बारे में। बहुत देर लगा दी जंगल में।

सौम्याः क्या करें अंकल, जंगल था ही इतना खूबसूरत।

डा. अनवर : **(हंसते हुए)** हा हा हा.....। वो तो खैर है ही। तो क्या देखा तुमने जंगल में।

रोहितः वहां कई तरह के पेड़ थे। मामा ने हमें बताया कि किस तरह पेड़-पौधे बारिश के पानी को बरबाद होने से रोकते हैं।

सौम्याः **(बीच में टोकते हुए)** और हमने वो भी तो देखा था..... क्या था वो..... खाल-खाल

गोविंद : खाल-खाल नहीं सौम्या.. चाल-खाल।

(सभी के हंसने का आवाज़)

सौम्याः **(हंसते हुए)** हां, हां..... चाल-खाल। वो तो क्या गजब की तकनीक है, बारिश के पानी को दोबारा उपयोग में लाने की।

गोविंद : सर.....। जितना थोड़ा-बहुत मैं जानता था। मैंने इन बच्चों को समझा दिया। ये और भी कुछ जानना चाहते थे तो मैं इन्हें आपके पास ले आया।

डा. अनवर : तुमने सही किया गोविंद। वैसे तो मुझे पूरा भरोसा है कि तुमसे ये बच्चे काफी कुछ सीख चुके होंगे। लेकिन फिर भी..... बताओ बच्चो, क्या जानना चाहते हो।

रोहितः अंकल अक्सर कहा जाता है कि पानी की बचत करनी चाहिए। जबकि हमें तो नदियों में, तालाबों में इतना ज्यादा पानी नजर आता है।

डा. अनवर : बच्चो सबसे पहले आपको समझना होगा कि मुख्य रूप से हमें दो तरह से पानी प्राप्त होता है। एक जमीन से और दूसरा सतह से।

सौम्याः इसका क्या मतलब हुआ।

डा. अनवर : जमीन के अंदर भी पानी का एक बड़ा भंडार रहता है। इसी पानी को भूजल कहा जाता है। इसे हम ट्यूबवेल या हैंडपम्प के जरिए हासिल करते हैं। और दूसरा है सतही जल।

ऐसा पानी जो जमीन के ऊपर दिखाई देता है, जैसे नदी-नाले वगैरह।

रोहितः ओह, तब तो पानी की उपलब्धता भूजल व सतही जल दोनों पर निर्भर होनी चाहिए।

डा. अनवर : बिल्कुल सही कहा तुमने रोहित। अब अगर अलग-अलग माध्यमों से मिल रहे पानी की बात करें तो देश में पर्याप्त पानी उपलब्ध है लेकिन सवाल ये है कि उस उपलब्ध पानी का हम लोग पूरी तरह इस्तेमाल कर पा रहे हैं या नहीं।

रोहितः वो कैसे...

डा. अनवर : एक अनुमान के मुताबिक देश में भूजल व सतही, दोनों माध्यमों से लगभग दो हजार अरब घनमीटर से ज्यादा पानी उपलब्ध है। ऐसी कई नदियां भी हैं, जिनमें वर्षभर पानी रहता है। साथ ही देश में वार्षिक औसत वर्षा लगभग एक सौ सत्रह (117) सेंटीमीटर होती है। सिर्फ बारिश से ही लगभग चार हजार घन किलोमीटर पानी मिल जाता है।

सौम्याः इतना अधिक पानी। इसके बावजूद कई इलाकों में पानी का संकट दिखाई देता है।

डा. अनवर : यही तो चिंता की बात है। इतना अधिक पानी उपलब्ध होने के बावजूद देश के कई हिस्से पानी के लिए तरसते हैं। इनमें वो इलाके भी शामिल हैं, जहां बरसात के सीजन में अच्छी-खासी बारिश भी होती है। दरअसल हम बारिश के पानी का पूरा और सटीक इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। अब भी बारिश का करीब सैंतालीस फीसदी पानी यूं ही बेकार चला जाता है। यानी यह पानी तमाम नदियों से होता हुआ समुद्र में मिल जाता है उसके खारे पानी में मिल जाता है।

गोविंद : इतने पानी का थोड़ा-बहुत हिस्सा भी यदि हम बचा सकें तो कितना अच्छा हो।

डा. अनवर : दरअसल दुनिया भर में लोग हजारों साल पहले से ही बारिश के पानी को सहेजने की दिशा में काम करते रहे हैं। हड़प्पा में की गई खुदाई में 4500 वर्ष पुराने वर्षा जल संरक्षण के सुबूत मिले हैं। जार्डन के पेट्रा व श्रीलंका के सिजिरिया में ईसा पूर्व के समय के साक्ष्य मिले हैं। इन्हें विश्व धरोहरों में भी शामिल किया गया है।

सौम्याः बारिश के पानी को संरक्षित करने के और तरीके क्या-क्या हैं अंकल।

डा. अनवर : इसका सबसे आसान तरीका है कि बारिश के पानी की मदद से हम जमीन के अंदर के जलस्तर को बढ़ाएं। इसके लिए गड्ढे बना दिए जाते हैं, जिसमें बारिश का पानी भर जाता है और यह पानी धीरे-धीरे रिसता हुआ भूजल स्तर में बढ़ोत्तरी करता है।

रोहितः ओह, बिल्कुल चाल-खाल जैसा।

डा. अनवर : हां, एकदम सही। और इसी तरह बड़ी-बड़ी खाइयां बनाकर भी भूजल स्तर में सुधार किया जाता है। कई बड़े संस्थान आजकल अपनी बाउन्ड्री वाल के साथ इस तरह की

खाइयां बना रहे हैं, जिन्हें रिचार्ज ट्रेंच कहा जाता है।

रोहित : मामा जी बता रहे थे हमारे देश के दूसरे इलाकों में भी बारिश के पानी को जमा करने की काफी सारी तरकीबें इस्तेमाल होती हैं, खासकर राजस्थान में।

डॉ अनवर : हां, ये बात बिल्कुल सही है। राजस्थान में पानी के स्थायी स्रोत नहीं के बराबर होने के कारण वहां के लोगों ने बारिश के पानी को जमा करने की कई तरकीबें ईजाद की थीं। वहां बारिश के बहते हुए पानी को मिट्टी-पत्थर की मेढ़ या झाड़-झंकार से रोककर किसी ताल या कुंडनुमा संरचना में जमा करने की परंपरा ही रही है। इस पानी को पत्थरों की नालियों के जरिये बड़ी-बड़ी बावड़ियों में इकट्ठा रखा जाता था।

सौम्याः और जैसा हमने नानाजी के घर में देखा था, वो भी तो एक अच्छा तरीका हो सकता है, बारिश के पानी को संरक्षित करने का।

डा. अनवर : हां, बिल्कुल। लोगों के मकान के ऊपर गिर रहे बारिश के पानी को संरक्षण करना एक महत्वपूर्ण तरीका है। पाइप के माध्यम से पूरी छत का पानी एक जगह इकट्ठा हो सकता है। इससे घरों में छोटे टैंक भी बनाए जा सकते हैं, जिनके पानी का उपयोग हम बरसात के बाद भी कर सकते हैं।

गोविंद : ... और बारिश का पानी जमीन के पानी की तुलना में ज्यादा साफ भी रहता है।

सौम्या : वो कैसे मामाजी ?

गोविंद : दरअसल, बारिश के पानी में ऐसे भारी लवण नहीं होते हैं जो कि चट्टानों या फिर जमीन से मिलने वाले पानी में होते हैं। जैसे फ्लोराइड, नाइट्रेट वगैरह। इसलिये बारिश के पानी का उपयोग बखूबी किया जा सकता है।

रोहितः हां, नानाजी भी ऐसा ही कर रहे हैं।

डा. अनवर : दिवाकर जी तो हमेशा इन कामों में आगे रहते हैं। उनसे प्रेरित होकर अब गांव के कई लोगों ने छत में गिरने वाले पानी का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

रोहितः ये तो अच्छी बात है..... लेकिन ये काम बड़े स्तर में भी होना चाहिए।

डा. अनवर : धीरे-धीरे इस संबंध में लोग जागरूक हो रहे हैं। कई राज्यों में भी बहुत अच्छा काम हो रहा है। तमिलनाडु, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों ने नई इमारतों में वर्षा जल संरक्षण के इंतजाम करना जरूरी कर दिया है। राजस्थान में तो हर सरकारी भवन में बारिश के पानी को जमा करने का इंतजाम करना अनिवार्य है।

रोहितः अंकल, क्या बारिश के पानी को पीने के काम में भी लाया जा सकता है।

डा. अनवर। हां। साफ करने के बाद बारिश का पानी पेयजल के रूप में इस्तेमाल करने लायक हो

जाता है। कई इलाकों में इसे पेयजल के रूप में भी इस्तेमाल किया जा रहा है।

गोविंद : सर, मैंने सुना है कि कुछ राज्य इसमें लोगों को काफी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

डा. अनवर : हां। कई राज्य सरकारें वर्षा जल का संरक्षण करने पर लोगों को टैक्स में छूट और सब्सिडी देकर प्रोत्साहित कर रही हैं। सामुदायिक भवनों और पूजा स्थलों में भी वर्षा जल को सहेजने के लिए लिए लोगों को जागरूक किया जा रहा है। तमिलनाडु के कई पूजास्थलों में भी बारिश के पानी को जमा करने के लिए भूमिगत टैंक बनाए गए हैं, जो भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

रोहितः ये तो बहुत ही अच्छा है।

डॉ अनवर : वर्षा जल संरक्षण को लेकर एनजीटी (NGT) यानी राष्ट्रीय हरित अधिकरण भी बेहद गंभीरता के साथ काम कर रहा है। मार्च सन दो हजार सोलह में एनजीटी ने केंद्रीय भूजल प्राधिकरण और दिल्ली जल बोर्ड को दिए एक आदेश में कहा था कि वर्षा जल संचयन को लेकर समान नियम और कानून बनाये जाने चाहिये। एनजीटी ने कहा था कि अस्पतालों, होटलों और मॉल में बारिश के पानी को संरक्षित करने लिए समान नियम हों।

गोविंद : हां... हां सर, मुझे याद आ रहा है कि एनजीटी ने दिल्ली के कुछ अस्पतालोँ, होटलों और मॉल पर बारिश के पानी को जमा करने के पर्याप्त इंतजाम ना करने पर जुर्माना भी लगाया था।

डा. अनवर : दरअसल पूरे समाज को ही इस मसले पर गंभीर रवैया अपनाने की जरूरत है। भूजल स्तर जिस तेजी से गिर रहा है वो तो सबके सामने ही है। बारिश के पानी को सहेजने की कोशिश तभी कामयाब हो सकेगी जब सभी लोग अपने-अपने स्तर पर कोशिश करेंगे। सिर्फ सरकारों या कुछ संस्थाओं के भरोसे रहने से बात नहीं बनेगी।

रोहित : जी, ये बात तो बिल्कुल सही है।

सौम्या : छुट्टियों के बाद घर लौटकर मैं अपनी सोसायटी में भी बारिश के पानी को बर्बाद नहीं होने दूंगी, क्यों भैया... ठीक रहेगा ना ?

रोहित : हां... हां... बिल्कुल।

सौम्या : ***(कुछ उदास स्वर में)*** लेकिन वहां तो छतों में काफी धूल और गंदगी रहती है।

डॉ अनवर : सौम्या इसमें उदास होने की जरूरत नहीं है। दरअसल अब ऐसे उपकरण भी मौजूद हैं जो शुरुआती बारिश के पानी को जल संग्रहण टैंक में जाने से रोक देते हैं। इससे टैंक में गंदगीयुक्त पानी नहीं जा पाता और वहां साफ पानी ही जमा होते रहता है।

रोहित : सौम्या, ये तो काफी अच्छा है। इस काम में मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा और अपने बाल

विज्ञान क्लब को भी इस मुहिम में शामिल करूंगा।

गोविंद : सर, यहां आकर इन बच्चों के साथ ही मुझे भी काफी कुछ सीखने को मिला। अभी हम लोग चलते हैं। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

डॉ अनवर : ठीक है, कभी – कभी आते रहियेगा। **(कुछ हंसते हुए)** ... और पानी की पैदावार में कुछ भी दिक्कत हो तो मुझे याद करना मत भूलना।

सौम्या और रोहित : जरूर अंकल.... अभी हम लोग चलते हैं। नमस्ते.... बाय....

(धीरे-धीरे धीमी होती पदचाप)

CLOSING MUSIC